भारत जापान मित्रता वर्ष के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

14 दिसम्बर 2006
टोक्यो

भारत-जापान मित्रता वर्ष 2007 के संयुक्त शुभारंभ के इस खुशी भरे मौके पर आप सबका स्वागत करते हुए मुझे काफी प्रसन्नता हो रही है। भारत और जापान के बीच सांस्कृतिक समझौते की पांचवीं वर्षगांठ के अवसर पर इस मित्रता वर्ष का शुभारंभ किया गया है।

2. लगभग एक हजार साल पहले भारत और जापान के लोगों ने दो सभ्यताओं के बीच जीवन्त रिश्तों की शुरूआत की थी। उस समय बौद्ध धर्म भारत से जापान पहुंचा था। इसके साथ ही भारत से जापान में प्रेम, अनुकम्पा और विश्वबन्धुत्व का संदेश जापान आया था।

3. आज हमने जिस भारत महोत्सव की शुरूआत की है, वह महोत्सव भारतीय संस्कृति की सम्पूर्ण विविधता, समसामयिक भारत के स्वतंत्र तथा खुले समाज की युवा ओजस्विता और भारतीय अर्थव्यवस्था में आ रहे महान बदलावों को भव्य रूप में प्रकट करेगा।

4. हमें भारत मे भी जापान महोत्सव का इंतजार है। इस जापान महोत्सव में आधुनिक तथा पारम्परिक जापानी संस्कृति का प्रदर्शन किया जाएगा। जापान की यह संस्कृति भारत में तेजी से लोकप्रिय हो रही है।

5. मुझे भारतीय समुदाय का भी यहां स्वागत करते हुए काफी खुशी हो रही है।

मैं जापान में भारत की संस्कृति, आत्मा और विचारों को जीवित रखने के उनके प्रयासों की सराहना करता हूँ। ये लोग प्रगतिशील भारत की ओजस्विता का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए ये लोग सही मायनों में दुनिया में भारत के राजदूत हैं। मुझे विश्वास है कि ये लोग अपने कौशल, सृजनशीलता और उद्यमिता के जरिए दोनों देशों के बीच नए सम्पर्कों का निमार्ण करेगा। ये खूबियां प्रवासी भारतीयों की पूरी दुनिया मे पहचान बन गई हैं।

6. मुझे इस बात की खुशी है कि प्रधानमंत्री आबे और श्रीमती आबे ने इस विशेष अवसर के लिए अपना समय दिया है। महामहिम, हम आपको भारत का बहुमूल्य मित्र मानते हैं। आपने दोनों देशों के बीच रिश्तों के विकास में गहरी निजी रुचि दिखाई है। आपने प्रधानमंत्री बनने से पहले और प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत के प्रति जो गहरी भावनाएं व्यक्त की हैं, उससे हमें काफी प्रसन्नता हुई है। मैं आपके भावनाओं की पूरी तरह कद्र करता हूँ और जापान के प्रति मेरी भी ऐसी ही भावनाएं हैं। मैं जापान के साथ मित्रता के इच्छुक करोड़ों भारतीयों की तरफ से यह बात कह रहा हूँ।

7. इन शब्दों के साथ, मुझे जापान में भारत महोत्सव के शुभारंभ की घोषणा करने में महान प्रसन्नता हो रही है।

******